शब्द रचना

शब्द रचना

परिभाषा :- दो या दो से अधिक वर्णों से मिले सार्थक रुप को शब्द कहते हैं; जैसे – ज्ञान, क्षमा, कमल आदि।

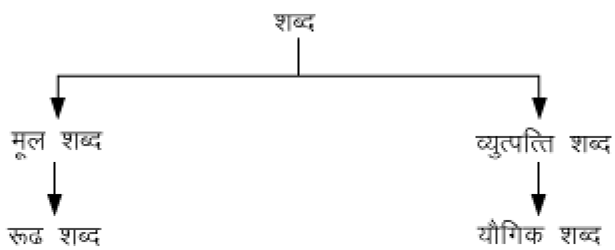

'ज्ञान' शब्द दो वर्ण ज्ञा और न के योग से बना है जिसका अर्थ जानकारी होता है। यदि इसे हम इस प्रकार लिखें 'नज्ञा' तो इससे इसका सही अर्थ प्रकट नहीं हो रहा है, इसलिए इसे शब्द नहीं कह सकते।

शब्द के प्रकार

शब्द दो प्रकार के होते हैं -

(1) रुढ़ शब्द

(2) यौगिक शब्द

(1) रुढ़ शब्द :- रुढ़ शब्दों को अन्य सार्थक खंडों में विभाजित नहीं किया जा सकता; जैसे - कैमरा, चश्मा, आइना, पक्षी आदि।

(2) यौगिक शब्द :- यौगिक शब्द, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है ; वे शब्द जिन्हें विभक्त किया जा सके और उसका सार्थक अर्थ हो, उसे यौगिक शब्द कहते हैं; जैसे -

बाँसुरीवाला – बाँसुरी + वाला

विद्यालय – विद्या + आलय

सुशील – सु + शील

यौगिक शब्द तीन प्रकार के होते हैं -

1) उपसर्ग

2) प्रत्यय

3) समास

उपसर्ग

उपसर्ग :- उपसर्ग ऐसे शब्द हैं जिनका स्वतंत्र रुप में प्रयोग नहीं होता है क्योंकि अलग से इनका कोई विशेष महत्व नहीं होता है। ये मूल शब्द के शुरु में लगा कर शब्द में विशेषता लाते हैं; जैसे - अ + धर्म, अप + मान = अपमान

उपसर्ग – हिंदी, संस्कृत, उर्दू के तत्सम शब्दों का प्रयोग होता है।

कुछ उदाहरण :-

उपसर्ग	**अर्थ**	**शब्द रुप**
अ	नहीं, विपरीत, बिना	अखंड, अनाथ, अचल, अदृश्य
अन्	नहीं, अभाव, विपरीत	अनेक, अनाचार, अनपढ़
अति	अधिक, ऊपर	अतिरिक्त, अत्यधिक, अत्याचार
अभि	तरफ, सामने, पास	अभिनेता, अभिनव, अभियोग
अनु	पीछे, समान	अनुगामी, अनुकरण, अनुकंपा, अनुशीलन
प्रति	ओर, सामने, विरुद्ध, प्रत्येक	प्रतिदिन, प्रतिकूल, प्रतिक्रिया, प्रतिशत, प्रतिवर्ष
स्व	अपना	स्वतंत्र, स्वछंद, स्वभाव, स्वराज्य
उप	समीप, छोटा	उपकरण, उपचार, उपभेद, उपदेश, उपसंहार
अधि	समीप, बड़ा, ऊपर	अधिकार, अधिपति, अधिकरण
प्र	अधिक, आगे, उपर	प्रगति, प्रयत्न, प्रवाह, प्रयोग, प्रतिष्ठा
वि	विशेष, उलटा	विरुद्ध, विवाद, विगत, विभिन्न, विख्यात, विचित्र
चिर	सदैव, बहुत	चिरकाल, चिरंतन, चिर्आयु

सम	बराबर	समकोण, समकालीन, समआयु, समालोचना, समतल
अप	बुरा, नीचा, हीन	अपव्यय, अपकीर्ति, अपमान, अपशब्द
कु	बुरा	कुरुप, कुमंत्रणा, कुकर्म, कुचाल
उत्	ऊँचा, श्रेष्ठ	उत्थान, उत्तम, उत्कर्ष, उत्पन्न
आ	तक, पूर्ण	आगमन, आजीवन, आदान, आकर्षण
निर्	निषेध, रहित, बाहर	निर्वाह, निर्मूल, निर्द्वंद्ध, निर्दोष, निर्जीव
स	अच्छा	सादर, सपूत, सरस, सपरिवार, सफल
सम्	संयोग, पूर्णता, साथ	सम्मान, संपूर्ण, संयम, संकल्प, सम्मुख, संभावना
दुर्	बुरा, कठिन	दुराचार, दुर्लभ, दुर्गम, दुर्भाग्य
परि	आसपास चारों ओर, पूर्ण	परिचय, परिवर्तन, परिमाण, परिक्रमा, परिवेश
बे	बिना	बेजान, बेबस, बेगुनाह, बेईमान, बेचारा, बेरहम
निस:	बिना, रहित	निचेष्ठ, निसंदेह, निष्काम
सु	अच्छा, सरल	सुगम, सुयश, सुरक्षा, सुलभ

प्रत्यय

ये भाषा के बहुत छोटे खंड है, जिनका अर्थ भी निकलता है ये मूल शब्द के अंत में जुड़ने पर नए शब्द बनाते हैं और शब्द में विशेषता लाते हैं;

जैसे -

लिख + आई = लिखाई

उपदेश + क = उपदेशक

बंगाल + ई = बंगाली

प्रत्यय के प्रकार :- प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं -

(1) कृत प्रत्यय

(2) तद्धित प्रत्यय

(1) कृत प्रत्यय :- जो प्रत्यय धातुओं के अंत में जुड़कर नए शब्दों का निर्माण करते हैं, उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं।

<u>क्रिया शब्दों में लगने वाले प्रत्यय (कृत प्रत्यय)</u> -

मूल शब्द	**प्रत्यय**	**प्रत्यय युक्त शब्द**
नकल	ई	नकली
खोद	आई	खुदाई
तैयार	ई	तैयारी
चल	आऊ	चलाऊ
पालन	हार	पालनहार
कतर	नी	कतरनी
लिख	आवट	लिखावट
उड़	आन	उड़ान
कृपा	आलु	कृपालु
घबरा	आहट	घबराहट
खेल	ना	खेलना
दे	य	देय
लेन	दार	लेनदार

भूल	अक्कड़	भूलक्कड़

तद्धित प्रत्यय :- जो प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों के अंत में जुड़कर नए शब्द बनाते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं।

मूल शब्द	प्रत्यय	प्रत्यय युक्त शब्द
दुख	ई	दुखी
बच्चा	पन	बचपन
द्रव	इत	द्रवित
भारत	ईय	भारतीय
वास्तव	ईक	वास्तविक
अमर	ता	अमरता
पत्र	ईका	पत्रिका
प्रसन्न	ता	प्रसन्नता
चल	आऊ	चलाऊ
शक्ति	शाली	शक्तिशाली
ईश्वर	त्व	ईश्वरत्व
भाव	ना	भावना
स्वतंत्र	ता	स्वतंत्रता
घट	इया	घटिया
बुद्धि	मान	बुद्धधिमान
पंडित	आई	पंडिताई
बंढ़	आई	बढ़ाई
कोठा	री	कोठरी
अधिक	तर	अधिकतर
ग्रंथ	कार	ग्रंथकार
रंग	ईन	रंगीन

चाल	आक	चालाक
वर्ण	न	वर्णन
शिक्षा	क	शिक्षक

समास

जब दो या दे से अधिक शब्दों के मेल से एक नया शब्द बनता है, तो उसे समास कहते है; जैसे - स्नान + गृह = स्नानगृह अर्थात् एक शब्द है - स्नान (नहाना) उसके लिए जो जगह है, उसे गृह (घर) कहते हैं तो दो शब्द स्नान + गृह से मिलकर एक शब्द बना स्नानगृह।

इसके पहले शब्द को पूर्वपद और दूसरे पद को उत्तर पद कहते हैं।

समास के मुख्य भेद

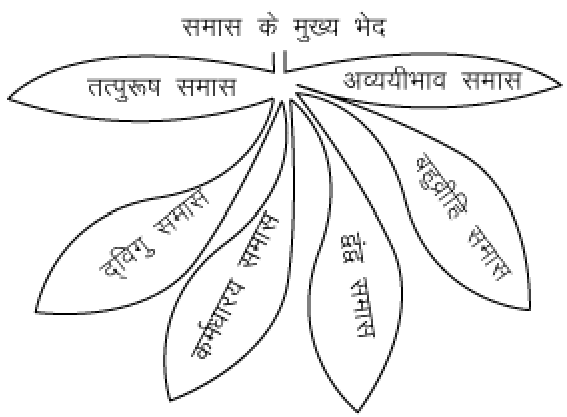

1. तत्पुरुष समास:- इसका पहला पद अर्थात पहला शब्द गौण और दूसरा शब्द प्रधान होता है; जैसे - आपबीती = आप पर बीती

कुछ उदाहरण -

समस्त पद	**विग्रह**
आशातीत	आशा से अतीत
गृहस्वामी	गृह का स्वामी
जन्मांध	जन्म से अंधा
पराधीन	पर के अधीन

भारतरत्न	भारत का रत्न
धर्मवीर	धर्म में वीर
गुणहीन	गुणों से हीन
दहीबड़ा	दही का बड़ा
तुलसीकृत	तुलसी द्वारा कृत
भयभीत	भय से भीत
घुड़सवार	घोड़े पर सवार
राजपुत्र	राजा का पुत्र
सत्याग्रह	सत्य के लिए आग्रह
हस्तलिखित	हाथ से लिखा
हवन सामग्री	हवन के लिए सामग्री
राजसभा	राजा की सभा
जेबघड़ी	जेब के लिए घड़ी
ग्रामगत	ग्राम को गया
गृहप्रवेश	गृह में प्रवेश
भुखमरा	भूख से मरा
गोशाला	गौओं की लिए शाला
रसोईघर	रसोई के लिए घर
वनवास	वन में वास
शरणागत	शरण में आगत
हथकड़ी	हाथ के लिए कड़ी

रणवीर रण में वीर

2. कर्मधारय समास :- इस समास में पहला शब्द विशेषण होता है और दूसरा शब्द जिसकी विशेषता बताई जाती है अर्थात् विशेष्य होता है; जैसे - पीतांबर (पीला) है जो अंबर (वस्त्र)

कुछ उदाहरण -

1	अंधकूप	अंधा है जो कूप
2	अधपका	आधा है जो पका
3	महात्मा	महान है जो आत्मा
4	नीलकंठ	नीला है जो कंठ
5	अकालमृत्यु	अकाल है जो मृत्यु
6	नीलांबर	नीला है जो अंबर
7	कालीमिर्च	काली है जो मिर्च
8	नीलगाय	नीली है जो गाय
9	दुरात्मा	दुर् (बुरी) है जो आत्मा

कभी-कभी विशेष्य पहले और विशेषण बाद में आ जाता है।

उदाहरण -

1	घनश्याम	घन के समान	श्याम
2	चंद्रमुख	चंद्र के समान	मुख
3	देहलता	देह रुपी	लता
4	कमलचरण	कमल के समान	चरण
5	नरसिंह	नर रुपी	सिंह
6	क्रोधाग्नि	क्रोध रुपी	अग्नि
7	विद्याधन	विद्या रूपी	धन

3. बहुव्रीहि समास :- यह समास जैसा नाम है बहुव्रीहि अर्थात् बहुत रुप रखने वाला है। इसमें दोनों शब्दों (पदों) को मिलाने पर एक तीसरा कुछ और (अलग) अर्थ निकलता है और वह ही प्रधान होता

है; जैसे – नीलकंठ – नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव। इसमें नील और कंठ दोनों गौण है तथा 'शिव' प्रधान है।

कुछ उदाहरण -

1	पीतांबर	पीला है वस्त्र जिसका	श्री कृष्ण
2	दशानन	दश है आनन जिसके	रावण
3	चतुर्भुज	चार भुजाएँ है जिसकी	विष्णु
4	गिरिधर	गिरि को धारण करने वाला	श्री कृष्ण
5	गजानन	गज के आनन वाला	गणेश
6	तिरंगा	तीन रंग वाला	भारतीय ध्वज
7	जितेन्द्रिय	जीत ली है इन्द्रियाँ जिसने	विष्णु (देवता)
8	त्रिलोचन	तीन है लोचन (नेत्र) जिसके	शिव
9	अंशुमाली	किरणें (अंशु) है माला जिसकी	सूर्य
10	घनश्याम	घन (बादल) के समान काला (श्याम)	श्री कृष्ण
11	पतझड़	जिसमें पत्ते झड़ते हैं।	विशेष ऋतु
12	विषधर	विष को धारण करने वाला	साँप
13	षडानन	षड् (छह) मुख वाला	कार्तिकेय

4. द्वंद्व समास :- इस समास में दोनों शब्द (पद) प्रधान होता है। द्वंद्व का अर्थ है जोड़ा, इसमें दोनों पदों को जोड़ने पर बीच का समुच्चयबोधक जैसे - और, या लोप हो जाता है।

कुछ उदाहरण -

	समस्त पद	**विग्रह**
1	अन्न-जल	अन्न और जल
2	जीवन-मरण	जीवन और मरण
3	भला-बुरा	भला और बुरा
4	सुख-दुख	सुख और दुख

5	पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
6	राजा रंक	राजा और रंक
7	अपना-पराया	अपना और पराया
8	धनी-निर्धन	धनी और निर्धन
9	छोटा-बड़ा	छोटा और बड़ा
10	गुण-दोष	गुण और दोष
11	लाभ-हानि	लाभ और हानि
12	माता-पिता	माता और पिता
13	खरा-खोटा	खरा और खोटा
14	खट्टा-मीठा	खट्टा और मीठा
15	घर-द्वार	घर और द्वार
16	दाल-रोटी	दाल और रोटी

5. द्विगु समास :- इस समास में पहला पद (शब्द) संख्यावाची होता है; जैसे - तीन, चार, छः, कोई भी संख्या को बताता हो, दूसरा शब्द प्रधान होता है; जैसे - पाँच वृक्षो का स्थान।

उदाहरण -

1	चतुर्भुज	चार भुजाओं का समूह
2	नवरत्न	नौ (नव) रत्नों का समाहार
3	चारपाई	चार पैरों का समाहार
4	चवन्नी	चार आनों का समूह
5	सप्ताह	सात दिनों का समूह
6	सतसई	सात सौ दोहों का समूह
7	त्रिवेणी	तीन (वेणी) नदियों का समूह
8	तिरंगा	तीन रंगों का समाहार
9	पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह
10	पंजाब	पाँच आबो (पानी) का समूह

11	दोपहर	दो पहरों का समाहार

6. अव्ययीभाव समास :- इस समास में पहला शब्द (पद) अव्यय होता है। अव्यय जैसे - यथा, भर, अनु, आ, बे आदि।

	समस्त पद	**विग्रह**
1	यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार
2	अनुरुप	रुप के योग्य
3	बेखटके	बिना खटके के (आशंका के)
4	भरपेट	पेट भरकर
5	प्रतिदिन	हर दिन (रोज़ाना)
6	आजन्म	जन्म से लेकर
7	दिनोंदिन	हर दिन
8	बीचोंबीच	बीच ही बीच में
9	द्वार द्वार	हर एक द्वार
10	यथासंभव	जितना संभव हो सके

समासों में अंतर-

कुछ समासों में एक जैसे शब्द होते हैं, इसलिए यह समझ में नहीं आता कि यह कौन सा समास है। इसको समझने के लिए इसके अंतर को जानना जरुरी है; जैसे – चतुर्भुज, नीलांबर, नीलकंठ, घनश्याम आदि।

1. द्विगु समास और बहुव्रीहि :-

द्विगु समास में पहला पद संख्यावाची होता है। जबकि बहुव्रीहि समास में पूरा पद विशेषण का काम करता है; जैसे -

चतुर्भुज – चार भुजाओं वाला ये द्विगु समास है।

चतुर्भज – चार भुजाएँ है जिसकी अर्थात् विष्णु, ये बहुव्रीहि समास है।

2. कर्मधारय समास और बहुव्रीहि समास में अंतर –

कुछ शब्द ऐसे हैं जो दोनों में समान पाए जाते हैं। इनको अलग करने के लिए इनको विग्रह करना पड़ता है तभी इनका अंतर समझ में आता है।

कर्मधारय समास में एक पर विशेषण दूसरा विशेष्य होता है; जैसे - पीतांबर – पीला है जो अंबर।

बहुव्रीहि समास में दोनों ही पद प्रधान न होकर तीसरा ही अर्थ निकलता है जैसे पीतांबर – पीला है वस्त्र जिसका अर्थात् कृष्ण।